सूफ़िवाद आतंकवाद का अंत करता तथा बौद्रिक उग्रवाद को चुनौती देता है

लेखक
मुफ़्ती मुह़म्मद रज़ा क़ादरी
शिक्षकः अलजामियतुल अशरफ़िय्या, मुबारकपुर

प्रसारण कर्ता
कुतुबख़ाना क़ादिरिय्या, मुबारकपुर
६ ख़ानक़ाहे क़ादिरिया चिश्तिया राहे सुलूक
चाँद पुर, मुरादआबाद यु.पी

सूफीवाद आतंकवाद का अन्त करता तथा बौद्धिक उग्रवाद को चुनौती देता है।

मुह़म्मद रज़ा क़ादिरी
शिक्षक: अलजामियतुल अशरफिय्या,
मुबारकपुर

प्रसारण कर्ता

कुतुबख़ाना क़ादिरिय्या, मुबारकपूर
व खानकाहे कादिरिय्या चिश्तिय्या
राहे सुलूक मुरादाबाद

पुषतकः सूफ़ीवाद आतंकवाद का अन्त करता तथा बौद्धिक उग्रवाद को चुनौती देता है

लेखकः ***मुहम्मद रज़ा क़ादिरी***
शिक्षकः अलजामियतुल अशरफिय्या, मुबारकपुर
ईमेलः
muftimohdrazaquadrimisbahi@gmail.com

मो0ः ७८६०७०४४९१
७५२१०६४४९१

प्रसारण तिथीः २०२१ई0

प्रसारकः कुतुबख़ाना क़ादिरिय्या, मुबारकपूर एवं खानक़ाहे क़ादिरिय्या चिश्तिया राहे सुलूक मूरादाबाद

पुनर्विलोकनः मास्टर मो० अफजाल साहब, कटरा, मुबारकपूर, पूर्व शिक्षकः अश्रफिया इन्टर कालेज, मुबारकपुर, आजमगढ़

प्रबन्धकः मुहम्मद मस्तान साहब, गोन्डी (बीजापुर, करनाटक)

सदकए जारिया के लिएः मुहम्मद अक्बर साहब, गोन्डी

अंतर्वस्तु

सूफीवाद द्वारा वैश्विक आतंकवाद की स्माप्ती

इक्कीसवीं शताबदी **के आरंभ** से ही मुसलमान कई **प्रकार** के फितनों और चुनौतियों से घिरे हैं, जिसने वैश्विक स्तर पर मनुष्य का अस्तित्व और मुसलिम शासनों के आधार को हिलाकर रख दिया है **तथा इस्लाम एवं** मुसलमानों की छवी बिगाड दी है। दबाव, तनाव, मनुष्यों की हत्या, रक्तपात, धोखे से निर्दोषों का **खून करना**, विशाल निर्माण का विनाश **तथा** दूतावास, होटल, वाणिज्यिक केंद्रों, लोकप्रिय क्षेत्रों और भीड़ भरे सार्वजनिक सड़कों **एवं** पूजा स्थानों में बम विस्फोट, **यह सभी अत्याचार** आतंकवादी संगठन **जिन**का प्रदर्शन कर रहा है, **इन**से रोंगटे खडे हो जाते हैं, दिल टूटजाता है और आँखों से आँसू बहते हैं, **उन्होंने** इस्लाम की महान सच्चाई, इसका उच्च अर्थ और उसके मूल्यों को **सीमित** कर दिया है, जो न्याय, ज्ञान और मार्गदर्शन में पूर्णता तक पहुंचें हुए हैं।

यह इस शताब्दी के लिए एक **महान** समस्या है ،विशेष रूप से मध्य पूर्व और **संपूर्ण** विश्व सामान्य में जिसका सामना कर रहा है। विश्व शक्तियां, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय यूनियन ने इस विनाशकारी फितने का समाधान खोजने के लिए अपने अत्यंत प्रयास किए परन्तु सुरक्षा और शांति **प्राप्त** करने में

विफल रहे और फितने की अग्नि (आग) न बुझा सके। इसपर अरबों और खरबों या उससे भी अधिक डालर खर्च किए लेकिन वह सफल नहीं हुए बल्कि उन आतंकवादियों के बल, शस्त्र एवं संख्या में बढोतरी हुई। अब दुनिया की दृष्टि इस्लाम को देख रही है और संपूर्ण विश्व उन सम्माननीय सूफियों पर नजर डाल रहा है जो मार्गदर्शन के सितारे और अंधेरे के दीपक हैं। वे वास्तव में हर समय नूह (मनु) की नाव हैं, जो उसपर सवार हुआ बच गया और जो पीछे रहा डूब गया। क्या उनके पास इस फितने का कोई उपचार और दवा है जिसे ख्वारिज का फितना कहा जा सकता है?

बहुत खेद और आश्चर्य है कि सभी आतंकवादी चरमपंथी जो इन आपत्तिजनक हमलों और आतंकवादी संचालन में शामिल हैं वह इस्लाम से जुड़े हैं और अपने अत्याचारों को जिहाद का नाव देते हैं। वह यह सब मुसलमानों की भावनाओं को उत्तेजित करने और उनके उत्साह को आकर्षित करने के लिए करते हैं। वे ईश्वर और उसके रसूल एवं ईमान वालों को धोखा देना चाहते हैं तथा वह खुद को धोखा देते हैं और वे महसूस नहीं करते हैं। वे हथियारों से लोकतंत्र के आधार पर क़ाएम सरकारों और शक्तिशाली शासनों से लडते हैं और उन्हें लगता है कि वे पुन्न का कार्य कर रहे हैं और उनके लिए परमेश्वर के

पास एक महान इनाम है। वे अपने आक्रामकता, आत्महत्या और विस्फोटक कृत्यों को शहादत कहते हैं किंतु अल्लाह जानता है कि वह नरक वालों के कुत्ते हैं। उन्हें लगता है कि वे सुधारात्मक और रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। कदापि नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। उन्होंने रक्त बहाया, शरीर के हिस्सों को बिखेरा, ऊंची इमारतों को नष्ट किया और धर्म के मूल्यों को विकृत कर दिया। वह पीडित आपदाएं जो इस्लाम के पक्ष में मध्य पूर्व के लिए स्थापित हैं, उन लोगों का एक अनिवार्य परिणाम है जिन्होंने उन फरजी नामों, धोके की शब्दावली, सम्बोधन और खतरनाक नारे में इस्लाम की सच्चाई को समेट दिया है, बौद्धिक और वैचारिक उग्रवाद के पीछे जिनका जनम हुआ है और जो सशस्त्र आतंकवाद से उत्पन्न हुए हैं।

सूफीवाद वालों के लिए समय आ गया है कि वह तैयार हो जाएं, आतंकवाद और अतिवाद के कारण से लडने हेतू मैदान में आएं, वे मानवता को गलत दिशा-निर्देश और विनाश की खतरनाक स्थिति से बचाने के लिए एक बड़ी और प्रभावी भूमिका निभाएं, उग्रवादी चरमपंथी पार्टियों की आशा के सामने एक विशाल ठोस बाधा के रूप में खड़े होजाएं जो मध्य मार्ग से हटे हुए हैं और उनहें उनके वास (क्षेत्र) में ही पराजित करदें।

विश्व ने साम्यवाद का अनुभव किया किंतु वह

दिवालिया हो गया, पूंजीवाद का अनुभव किया किंतु दिवालिया हो गया, समाजवाद का अनुभव किया किंतु दिवालिया हो गया और प्रजातंत्र का अनुभव किया तो **कठिनाइयों से पीडित होगया,** आओ इनशा **अल्लाह इस्लामी** सूफीवाद का अनुभव करें जिसकी **चादर** से कोई परोक्ष और उग्रवादी बाहर नहीं।

अब हम इस विचार को दस्तावेज़ करने के लिए पश्चिमी ओरिएंटलिस्ट एच० आर० गिबन के प्रसिद्ध शब्द की पेशकश करते हैं जिसे सोने के लीब्रा से तौला **जाता** है। ब्रिटेन में ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में लोगों की एक बड़ी भीड़ को संबोधित करते हुए वह सूफीवाद और शुद्ध सूफियों के बारे में अपने विचार व्यक्त करता है।

इस्लामी इतिहास में, इस्लामी संस्कृति को अक्सर चुनौती दी गई और शक्ती के साथ उस से लडा गया, इस्लामिक समाज पर यह अपना प्रभाव और शक्ति खोने वाला था, किंतू यह मगलूब (पराजित) न हुआ क्योंकि सूफीवाद और सूफीयों के तरीके ने उन्हें बनाए रखने और बढ़ावा देने में मदद की और मजबूत आध्यात्मिक समर्थन द्वारा समर्थित किया, कोई शक्ति जिसका सामना नहीं कर सकती।

हम अगली पंक्तियों में उन कारणों की समीक्षा करेंगे जो वैचारिक उग्रवाद और सशस्त्र आतंकवाद की ओर लेजाते

हैं और फिर हम सुफी शिक्षाओं के अनुसार उसका उपाय बताएंगे।

पहला मुद्दा: ऐसे कई कारण हैं जो लोगों को इस घाटी में छलांग लगाने पर उभारते हैं।

जिसमें पूर्व और पश्चिम तथा अविश्वास और इस्लाम के बीच सांस्कृतिक संघर्ष शामिल है

जब पश्चिम पूर्व से आगे बढा, नए विज्ञान के क्षेत्र में विकसित हुआ और नए आविष्कारों का आविष्कार किया, इसके परिणामस्वरूप विभिन्न देशों और उनके निवासियों पर सांस्कृतिक परिवर्तन और सांस्कृतिक नियंत्रण हुआ तो एक समूह ने उसे स्वीकार नहीं किया। विकसित देश अपनी सभ्यता और संस्कृति की तरफ उसको बुलाते रहे तथा उसके दायरे को सीमित कर दिया ताकि वह उसकी सभ्यता को स्वीकार करले। जैसा कि मिश्र में नेपोलियन के आक्रमण और मिश्र की संस्कृति पर फ्रांस के कब्जे के बाद हुआ। अफगानिस्तान के जमालुद्दीन और उनके छात्र मोहम्मद अबदु रब्बिह ने पैरिस में स्थानांतरित होने तक फ्रांसीसी कब्जे का विरोध किया।

उनमेंसे यह भी है कि सरकारें और वैश्विक

ताकतें अपने भ्रष्ट उद्देश्यों, सत्ता एवं अन्य राज्यों पर नियंत्रित होने के लिए इन आतंकवादी दलों का इस्तेमाल करती हैं। यह एक भयानक और बहुत अजीब बात है।

और मेरी बात की सच्चाई पर अफगानिस्तान में तालिबान और अल कायदा की स्थिति गवाही देती है। रूसी संघ की नग्नता को खत्म करने और उसे इस्लामी रूप में एक सटीक और सर्वोत्तम विनियमित आधार पर स्थापित करने तथा आतंकवादी संगठनों हेतू सैन्य और वित्तीय सहायता का समर्थन करने और सैन्य साधन प्रदान किए जाने पर संयुक्त राज्य द्वारा तालिबान और अल-कायदा स्थापित किए गए थे। जब रूसी संघ विभाजित होगया, उसकी हवाएं चली गईं, उसके महान राज्य के टुकडे टुकडे होगए और इन संगठनों का सेवन होगया और फल पैदा होगया तथा यह लगभग अफगानिस्तान पर कब्जा करने वाले थे कि इनकी कटाई का समय आगया और अमरीकी सेनाएं अफगान और तालिबान पर आक्रमण करने लगीं, उसपर बम फोडे; क्योंकि तालिबान एक बढ़ती ताकत है। उसके पहाड़ों को बरबाद कर दिया, उसकी आबादी को तबाह कर दिया, लोगों की हत्या की और उनहें घायल किया।

उनका उद्देश्य यही था कि वह देश को नष्ट करदें, उनका सनियंत्रण तोड़दें, उनके धन पर काबू पाएं, हमलों और मतभेदों का पौधा लगाएं और उस आतंवाद को **जन्म** दें जिससे इस क्षेत्र में अस्थिरता हो गई। तो यह स्वाभाविक था कि इन दोनों शक्तियों के बीच प्रतिक्रियाएं और संघर्ष होते।

जब तालिबान और अलकायदा को कोई शक्तिशाली साधन नहीं मिला, तो उनहोंने अपने आतंकवादी विचारों को सामने लाने के लिए गंभीर कार्रवाई की। इस्लाम के तथ्यों को **सीमित** कर दिया, उससे खिताब और नारे लिए और मुस्लिम भावनाओं **तथा इस्लामी** उत्साह को आकर्षित करने के लिए एक शक्तिशाली हथियार के रूप में जिहाद और शहादत आदि **शब्दों** का प्रयोग किया। सरकारों और शासनों के विरोध में जिहाद का झंडा उठाने लगे। इसके परिणामों और उस **स्थितो** को नहीं देखा जिससे आज मुसलमान गुज़र रहे हैं। **उन्हों ने अपने लक्ष हेतू** अफगानिस्तान में स्कूल स्थापित किए और मुसलमानों के युवाओं में जिहाद की भावना को प्रसारित करना **तथा** उसके गुण बताना जारी रखा। मस्तिष्क धोए और मूर्ख लोग इन नारों से धोका खागए और उनसे हथियार चलाने के लिए प्रशिक्षण लेने लगे। इस प्रकार **उन्हों**ने दुनिया का ध्यान **अपनी ओर** आकर्षित किया। दिन बढ़ते गए, और उनकी

बुराई बढती गई। फिर उन्होंने मिसाइलें विस्फोट की, धोखे से निर्दोषों की हत्या की, पुरुषों और महिलाओं को **बंधक बनाया तथा** मस्जिदों, होटल, हवाई अड्डों, लोकप्रिय क्षेत्रों आदि में रक्त बहाया।

दूसरा मुद्दा: इस्लाम के प्रसार को रोकने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके फैलाव का दायरा निर्धारित करने का अथक प्रयास

जब यहूदियों, ईसाई और बहुदेववादी सभी को तेजी से इस्लाम के प्रसार और पश्चिम, संयुक्त राज्य अमेरिका **एवं** अन्य लोगों में इस्लाम की ओर बढ़ते हुए मतदान का एहसास हुआ और बीसवीं शताब्दी में भगवान के धर्म में लोगों को समूहों में प्रवेश करते देखा तो वह इससे **भयभीत हा** गए और **उस इस्लामी उप्देश** से लड़ने के लिए सर्वसम्मति बनाई, जिसने उनकी अज्ञानता का उल्लंघन किया, उनके देवताओं को ऐब लगाया, और ईश्वर, जीवन, **मानवता तथा** ब्रह्मांड से संबंधित उनके विचारों और उनकी धारणाओं को अज्ञानता घोषित किया, उन्होंने त्रिकोणीय सिद्धांत के निर्माण को नष्ट कर दिया और **इस्लामी** निमंत्रण को रोकने और **उसे सीमित** करने **तथा** इसके फैलाव के दायरे का निर्धारण करने हेतू **अथक प्रयास**

किया एवं अनेक माध्यमों का प्रयोग किया। जैसा कि उन्होंने पैगंबर के पैग़ाम को विकृत करने का प्रयास किया और उसके विरुद्ध युद्ध घोषित किया था।

ये विदित है कि आधुनिक खोज और नए विज्ञान के विकास ने इस्लाम के प्रसार में मदद की है, क्योंकि यह इस्लाम की वैधता को साबित करता है और सत्य का समर्थन करता है तथा यहूदियों, ईसाई एवं बहुदेववादियों के विश्वासों को ध्वस्त करता है, क्योंकि त्रिकोणीय सिद्धांत और यहूदियों का उज़ैर अलैहिस्सलाम को परमेश्वर का पुत्र कहना, मन और परिवहन एवम् आधूनिक विज्ञान उससे सहमत नहीं हैं। ज्यादातर लोग अपने ईसाई, यहूदी और हिंदू धर्मों पर विश्वास नहीं करते हैं और उसे केवल अनुकरण एवं परंपरा समझते हैं। जब वे अपने धर्म से निराश हो गए तो इस्लाम के निकट आए और इस धर्म का एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक अध्ययन किया, जब उन्हें पता चला कि यही सही है तो उसे गले लगाया और उन सभी संदेहों को एक ठोस जवाब मिला जो उनके सीनों और उनके मन में थे। लेकिन यह कुफ्र और बहुदेववाद की दुनिया को झिंझोडने वाली बात थी।

यही कारण है कि वे इस्लाम का पवित्र चेहरा विकृत करने लगे, उसपर झूटे संदेह डालने लगे, इस्लामी नियंत्रण की राह में बाधा डालने का प्रयास किया, लोगों को उससे दुर

करने के लिए विभिन्न तरीकों का प्रयोग किया और उसके विरुद्ध क्रूस की घोषणा की ।

अपने लक्ष्यों के लिए आतंकवादी आंदोलनों का प्रयोग उन का महान शस्त्र था और इसके लिए अफगानिस्तान में अलकायदा और तालिबान को जनम दिया जैसा कि पहले ही उल्लेख किया है। अमेरिकी और पश्चिमी उपनिवेशवाद की छाया तले **इराक़ एवं शाम में दाइश की स्थापना की जिसने सातवीं** शताबदी के तातारी फितने की याद ताजा कर दी। और जो उत्पीड़न, रक्तपात और मानव आत्माओं की हत्या **दाइश ने किया** उसके सामने **हलाकू**, हिटलर और मुसोलिनी **की** उत्पीड़न कम हैं। **क्योंकि उन्हों ने** कदापि **इस्लाम का दावा नहीं किया** किंतु यह विद्रोही और अन्यायपूर्ण **जो** नरक वालों के कुत्ते, इस यूग के खवारिज **तथा** पृथ्वी पर सृजन और सृष्टि में सबसे बुरे हैं, मुसलमानों के भेस में हैं, कुरआन पढते हैं और नमाज़ें अदा करते हैं।

उनके बारे में हमारे पैग़ंबर **ने** हमें पहले ही बतादिया है।

عن علی رضی الله عنه قال انی سمعت رسول الله صلی الله علیه و سلم یقول سیخرج قوم من آخر الزمان، أحداث الأسنان، سفهاء الأحلام یقولون من خیر قول البریة لایجاوز إیمانهم حناجرهم یمرقون من الدین کما یمرق السهم من الرمیة، فأینما لقیتموهم فاقتلوهم فإن فی قتلهم

أجرالمن قتلهم يوم القيمة.[1]

हज़रत अली रजियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना कि अंतिम समय में कुछ किशोर, मूर्ख लोग निकलेंगे जो सृष्टि की सबसे अच्छी बात कहेंगे, ईमान उनकी गरदन से आगे नहीं बढेगा, वे धम से ऐसे ही निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है, तुम जहां उनको पाओ मार डालो, जो उनको मार डालेगा कियामत के दिन उसको सवाब मिलेगा।

खवारिज के बारे में मुतवातिर (एक के बाद एक) हदीसें आई हैं। और उनमें जिन निशानियों का विवरण है वे सब इस समय के खारिजीयों में पाई जाती है। पैगंबर صلي الله عليه و سلم ने उनके बहुत से लक्षण बताए हैं, जो यह हैं:

१)أحداث الأسنان किशोर २)سفهاء الأحلام मूर्ख लोग ३) كث اللحية घनी दाढ़ी वाले (दिखने में धार्मिक लगेंगे) ४) مشمر الإزار छोटे इज़ार वाले ५) يخرج ناس من قبل المشرق कुछ लोग पूर्व से निकलेंगे ६)لايزالون يخرجون حتى يخرج اٰخرهم مع المسيح الدجال वह निकलते रहेंगे, उनका आखिरी संगठन मसीह दज्जाल के

---

[1] صحيح البخارى، كتاب استتابة المرتدين و المعاندين و قتالهم، باب قتل الخوارج و الملحدين بعد اقامة الحجة عليهم، حديث ۱ ۲۵۳ ـ صحيح المسلم، كتاب الزكوة، باب التحريض على قتل الخوارج

साथ निकलेगा ७)لايجاوز إيمانهم حناجرهم उनका ईमान उनकी गरदन **से नहीं बढे**गा ८)يتعمقون و يتشدون في العبادة वे पूजा में सख्ती करेंगे ९)يحقر أحدكم صلاته مع صلاتهم و صيامه مع صيامهم तुम उनकी नमाज़ और उपवास के सामने अपनी नमाज़ और उपवास को तुच्छ जानोगे १०)لاتجاوز صلاتهم تراقيهم उनकी नमाज़ उनके गले से नहीं उतरेगी (उनकी नैतिकता पर उनकी नमाज़ का प्रभाव नहीं दिखेगा ११) يقرؤن القرآن ليس قراءتكم إلى قرائتهم بشيء वे क़िराअत करेंगे, तुमहारी क़िराअत उनकी किराअत के सामने कुछ नहीं। १२) يقرؤن القرآن لايجاوز حُلُوقهم वे कुरान पढेंगे **किंतू** कुरान उन**की ह़लक** से नहीं उतरेगा। १३)يقرؤن القرآن يحسبون أنه لهم و هو عليهم कुरान पढेंगे और सोचेंगे कि कुरान उन्हें अनुमोदित करता है **जब**कि वह उनके विरुद्ध है। १४)يدعون إلى كتاب الله و ليسوا منه في شيء ईशवर **की पुस्त**क की तरफ **बुलाएं**गे और वह उसपर नहीं होंगे। १५)يقولون من خير قول البرية सृष्टि की सबसे अचछी बात कहेंगे (वे धार्मिक नारे घोषित करेंगे)। १६) يقولون من أحسن الناس قولا **लोगों में सबसे अच्छी वाणी** करेंगे। १७)يسيئون الفعل बुरा काम करेंगे। १८)هم شر الخلق و الخليقة सृष्टि और सृजन में सबसे बुरे हैं। १९) يطعنون على أمرائهم و يشهدون عليهم بالضلالةअपने नेताओं को ताना देंगे और उनके विरुद्ध **कुफ्र** की गवाही देंगे।

२०)يخرجون على حين فرقة من الناس वे लोगों के जुदा होने के

समय निकलेंगे। जैसाकि वे इस समय उभरे **जब कि मुसलमानों मे एकता नहीं है**। २१) يقتلون أهل الإسلام و يدعون أهل الأوثان वे इस्लाम के लोगों को मारेंगे और मूर्तियों के पुजारियों को छोड देंगे। जैसेकि दाइश और **सभी आतंक**वादी दल कर रहे हैं। वे केवल मुसलमानों से लडते हैं, बहुदेववादियों और मूर्तियों के पुजारियों से नहीं लडते, नहीं लडते यहूदियों और ईसाइयों से **तथा इसराईल** राज्य में बमों के गोले नहीं बरसाते, जो कि **असामाजिकता** और बहुदेववाद का केंद्र है और क्षेत्र में आतंकवाद **एवं** उग्रवाद की जड़ है। २२)و يسفكون الدم الحرام वे हराम ख़ून बहाएंगे। जैसा कि दाइश और उस जैसे बहा रहे हैं, **अर्थ यह है कि** वे निर्दोष मुसलमानों **तथा गैर मुस्लिमों** की हत्या जाइज़ समझेंगे।

२३)يؤمنون بمحكمه و يهلكون عند متشابه मुहकम पर विश्वास करेंगे और मुतशाबिह में हलाक होजाएंगे। जैसाकि विद्रोही दाइश ख़िलाफते इसलामी का दावा करके सिराते मुसतक़ीम से दुर चली गई। २४) ينطلقون إلى ايات نزلت في الكفار فجعلوها على المؤمنين वे कुफ्फार के बारे में उतरने वाली आयतों को मुसलमानों पर डालेंगो जैसेकि यह उनकी आदत है। इसी **कारण** उनहोंने शाम और यमन में अंबिया (भविष्यवक्ताओं) और सालिहीन की कब्रों पर बम फोडे। उवैस क़रनी और रसूल صلي الله عليه و سلم के सहाबी हजर

बिन अदी رضي الله عنهما की क़ब्रों पर गोले बरसाए।

२५)يمرقون من الدين كما يمرق السهم من الرمية वे धर्म से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है, उन के दिल पत्थर जैसे होजाएंगे या उससे भी कडे, वे इसलाम की ओर नहीं पलटेंगे। २६)الأجر العظيم لمن قتلهم जो उनकी हत्या करे उसके लिए महान इनाम है। २७)خير قتلى من قتلوه मृतकों में अच्छा मृत वह है जिसकी हत्या इन लोगों ने की। २८)شر قتلى تحت أديم السماء वे आकाश तले सबसे बुरे मृत हैं।

२९)إنهم كلاب النار वे नरक के कुत्ते हैं। इस विरोधी ख़ारिजी दल से संबंधित यह बातें सादिक़ (सच्चा) व मसदूक़ صلي الله عليه و سلم की ज़बान से निकली हैं तथा अइम्मए ह़दीस (हदीस के इमामों) ने अपनी पुस्तकों में लिखा है।

३०)अब्दुल क़ाहिर बग़दादी ने अपनी पुस्तक अल्फर्क़ु बैनल फिरक़ में उनका लक्षण अवगत कराया है कि वे गुनाहे कबीरह (महान पाप) करने वाले को अनंत काल तक नरक वाला समझेंगे और उनका रक्त और पूंजी मुबाह़ जानेंगे।

३१)इब्ने तैमिया ने अपने मजमूअए फतावा में बताया जिसका सारांश यह है: वे एक विषेश क्षेत्र की घेराबंदी करेंगे उसे अपनी आतंकवादी गतिविधियों का केंद्र बनालेंगे जैसा कि खवारिज ने ह़रौरा को हज़रत अली बिन अबू तालिब के युद्ध में अपना गढ़ और दुर्ग

बनाया था।

३२)वे अहले ह़क़ के साथ वार्ता पसंद नहीं करेंगे जैसा कि उन्होंने ह़ज़रते अली रज़ियल्लाहु अनहू के युझ में तह़कीम को ठुकरादिया।

जैसा कि हम वर्तमान काल में देख रहे हैं कि ख़वारिज ने शाम और इराक़ पर घेराबंदी की है और उसे युद्ध एवं आतंकवाद से संबंधित गतिविधियों के लिए गढ़ और किला बना लिया है। और कब्जा किए हुए क्षेत्र को (अददौलतुल इसलामिया) का नाम दिया है। वे युद्ध को रोकने के लिए सुरक्षा बलों के साथ वार्ता करने पर सहमत नहीं होते।

यह ख़ारिजी संगठन तीन वर्ष पूर्व शाम और इराक़ में इस्लाम की आड में धोके के ख़िताबों और महान नारों के साथ निकला। पेट्रोल और डीज़ल के भंडार पर कब्ज़ा करता रहा तथा इराक़ी और शामी फौजों को पीछे करता रहा। शस्त्र और पूंजी से किसने उनकी सहायता की? क्या इराक़ी शासन ने उन्हें इसकी आपुर्ति की? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जो उत्तर चाहता है। इस गैर शासनीय संगठण को सैन्य उपकरण कहॉ से मिले? इराक़ सरकार पर कब्जा करने, उसकी सेनाओं से लडने और भिन्न क्षेत्रों से उसे तडी पार करने की शक्ति उसमें कैसे आई? ईश्वर की सौगंद यह सब इस्लाईल और अमरीका की ओर से सावधानीपूर्वक योजना के साथ हुआ है। किसने शीआ और अहलेसुन्नत के मतभेद को उभारा? यह गरम मुद्दे हैं जो संयुक्त राज्य अमरीका, संयुक्त

राष्ट्र एवं संसार के प्रत्येक राष्ट्र की ओर आकर्षित होते हैं।

अरब के बीजो बीच महान इस्राईल शासन की स्थापना का प्रयास

बुध्दी और ज्ञान वालों से यह बात ढकी छुपी नहीं है तथा सभ्यताओं ने इसका मशाहदा किया है कि इस्राईल अमरीका को अपनी उंगली पर नचाता है, उसके हाथ में उसकी महाधमनी है। खिलौने की भॉती उसे जिस प्रकार चाहता है धुमाता है। प्राचीन एवं आधूनिक इतिहास मुसलमानों के विरुध यहूदियों के षडयंत्र का पता देते हैं। यह धोके, शडयत्र, व्देष तथा नफरत वाले लोग हैं। पैग़मबर के युग में अपनी विद्रोही गतिविधियों के कारण खैबर से निकाले गए। फिर भिन्न छेत्रों में फैल गए और कई स्थानों से तडी पार किए गए। अंततः बडी संख्या में जर्मनी गए। जब सरकार के विरुध उनका शडयत्र बढा तो हिटलर ने उनहें कडी मार लगाई और हज़ारों को जलाकर राख कर दिया तथा उन्हें अपने देश से भगादिया। फिर उन लोगों ने दुष्ट अमरीका का सहारा लिया और उसे अपनी शरण बनालिया। कुर्आन ने उनकी प्रकृती को उजागर किया है और उनकी छ़पी आदतों से इस प्रकार मुखोटा हटाया है।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ حَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَ
بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۔(ال عمران ١١٢)

यदो वे अल्लाह एवं उसके अनुयायी मूमिनीन के

संग न हुए तो जिल्लत ही उनका भाग्य है, वे अल्लाह के कोध को लेकर लौटे और उनपर रुसवाई की मार है।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ۔(البقرہ۶۱)

उनपर जिल्लत और रुसवाई की मोहर लगादी गई है तथा वे अल्लाह क कोध को लेकर लौटे इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र करते थे और पैगमबरों की नाहक़ हत्या करते थे, यह इसलिए है कि उन्होंने प्रमेशवर की आज्ञा का पालन न किया एवं हद से बढे।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۔(البقرہ۱۲۰)

तुमसे यहूद और नसारा प्रसन्न न होंगे जबतक तुम उनक धर्म का पालन न करो।

कुर्आन ने हमें यहूदियों के शडयत्र से डराया है और घोषणा की है कि तुम,

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ۔(المائدہ۸۲)

लोगों में ईमान वालों का सबसे बडा शत्रू यहूदियों को पाओगे और उन्हें जिनहोंने शिर्क किया तथा ईमान वालों से प्रेम में ज़्यादा निकट नसारा को पाओगे इसलिए कि उनमें पुरोहित और रुहबान है तथा वे आश्चर्यचकित नहीं होते।

अमरीका और यूरुपीय राज्यों के सहयोग से १९४८ में फिलस्तीन की भूमि पर उनका क़ब्जा हुआ। और फिलस्तीन की भूमि पर इसराईली शासन की स्थापना की। ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि १९६७ में अरब और इसराईल युद्ध का आरंभ हो गया। अंततः अरब विफल रहे और इसराईल फिलस्तीन की बहुत सी भूमि पर काबिज होगए।

और अब यहूदियों का इरादह यह है कि एक महान इसराईली शासन आधारित किया जाए जो फरात की नदी से नोल सागर तक फैला हो तथा उसमें अरब जज़ीरह, उरदुन, शाम, इराक, मिश्र, यमन, कुवेत, और पूरी अरब खाडी शामिल हो, जैसाकि यहूदियों ने १९६७ के युद्ध में सफलता के पश्चात ही अपनी उस हुकूमत के नक़्शे का प्रकाशन किया जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे हैं।[१] और यहूदी नेता दाफीद बिन गूरियून के वह शब्द इसको प्रलेखित करती है जो उसने कुद्स में यहूदी सेनाओं के प्रवेश के पश्चात एक भाषण देते हुए कह। वह अपने भाषण का अंत इस बात पर करता है कि हम कुद्स पर ग़ालिब आचुके हैं और यस्रिब (मदीना) की ओर अपने

[١] السيرة النبوية عرض وقائع وتحليل أحداث. الدكتور علي محمد الصلابي ص٢٢٩ نقلا عن السيرة النبوية لأبي فارس

मार्ग पर हैं।[१] तथा यहुदी प्रधान मंत्री ग़ोल्दा माएर का वह भाशण भी यहूदियों के इन इरादों को प्रलेखित करता है जो उसने कुद्स एवं खलीजु ईलातिल अक्बा पर काबिज़ होने के पश्चात दिया। उसने कहा कि मै मदीनह और हिजाज़ में अपने पूर्वजों की गंध सूंघ रहा हूं वह हमारे देश हैं हम उन्हें पुनः प्राप्त करेंगे।[२]

यह बातें दर्षाती हैं कि यहूदियों और नसारा के हृदय में क्या अद्वष्य है। इस महान फातिहाना इरादे को व्यावहारिक वस्त्र पहनाने हेतू अनिवार्य था कि नागरिक और धार्मिक युद्ध की अगनी भडकाई जाए, मुस्लिम देशों में एकता का अंत किया जाए ताकि उनका बल तोड कर उन्हे निर्बल करदें और उनके लिए एक दूसरे की सहायता करना संभव न रहे। फिर तो प्रत्येक मुस्लिम राज्य में वाद विवाद तथा मतभेद का बढना आवश्यक था।

मुस्लिम देशों मे बढते मतभेद, पाकिस्तान में अतिवाद की बढोतरी तथा पुर्व में होने वाले बम धमाकों और बेचैनी की पूरी जिम्मेदारी अमरीका और उसके माालिक इसराईल की आरे जाती है।

संपूर्ण विश्व एवं विशेष रुप से मध्य पूर्व में शांती और सलामती के सभी प्रयास विफल रहेंगें जब तक

---

[२] السيرة النبوية عرض وقائع وتحليل أحداث. الدكتور على محمد الصلابي ص٢٢٩ نقلا عن السيرة النبوية لأبي فارس

[३] السيره النبوية الدكتور محمد على الصلابي ص٢٢٩ نقلا عن جريدة الدستور الأردنية العدد(٤٢١٣) نقلا عن السيرة النبوية لأبي فارس (ص٢١٤)

अमरीका और इसराईल अपने उन इरादों से बाज़ न आजाए जिस के कारण पाकिस्तान में अतिवाद में बढोतरी हुई और यमन, शाम, इराक, लेबिया एवं मिश्र में नागरिक संघर्ष की अगनी भडक उठी तथा फिलस्तीन में मानव शोषण ओर नगर विनाश हआ।

शांती के सामान्यीकरण और आतंकवाद के विरुध्द संघर्ष में सूफीवाद तथा सूफिया की भूमिका

वह आपत्तीजनम परिस्थितियां एवम् भयानक चुनौतियां जिससे आज विश्व दोचार है और हमें जिसका सामना है वह उम्मत–वस्त के लिए एक कडी परिक्षा है। उससे उसी समय मुक्ती संभव है जबकि हम सर्वशक्तिमान अल्लाह से पश्चाताप और तौबा करें, उस से क्षमा मांगें तथा उसकी शरण में आएं। क्योंकि विपदा पाप करने पर ही उतरती है और तौबा से ही दूर होती है। अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में फरमाया:

وَمَآ اَصَابَكُمۡ مِّنۡ مُّصِيۡبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتۡ اَيۡدِيۡكُمۡ

जो पीडिता तुम्हें पहुंची वह वही है जो तुम्हारे हाथों ने प्राप्त किया।

मुसल्मानों हेतू जो आज़माइशें और फितने हैं उसकी पूरी जिम्मेदारी उम्मत पर आती है क्योंकि उन्होंने अल्लाह के अहकाम को पीठ पीछे डाल दिया और अपने ईश्वर को भूल गए, तो उसने उनकी सहायता करना छोड दिया, वे ख्वाहिशात के पीछे

चले और नफ्स के पैरुकार बने तो अल्लाह ने संसार ही में उन्हें यह अजाब दिया।

हम पर अनिवार्य है कि हम अपने निर्देश की ओर आएं और उस अल्लाह से जो तमाम सृष्टि का पालनहार है अपना संबन्ध मजबूत करें, जो ईशवर को ओर लौटा उसका पालन करें तथा औलिया और आदरनीय सूफिया के मार्ग पर चलें जो अल्लाह के निकट हुए और लोगों से अलाहदा हो गए, आस्था की आंख से हक़ का मुशाहदा (अवलोकन) किया और अधिकार वाले हो गए एवं हक़्कुल यकीन (सत्यविश्वास) की बलंदी तक पहुंच गए, तो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज्ल से आकाश का कुतुब एवम् इमाद, भूमि तथा पर्वत का अलम और वतद बनाया।

तसव्वुफ हमारे यहां इह़सान के साथ किताब व सुन्नत के पालन करने का ही नाम है। जैसा कि सय्यिदुत्ताइफा जुनद बगदादी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः हमारा ज्ञान किताब और सुन्नत से मुक़य्यद (कैद) है, तो जब तसव्वुफ किताब व सुन्नत पर खरा उतरेगा तो उसे स्वीकार करना हमारे लिए अनिवार्य होगा और कुछ लोग जो कहते हैं कि तसव्वुफ किताब व सुन्नत से निकलने और आगे बढ जाने का नाम है ऐसा कदापी नहीं है। यदी ऐसा होगा तो हम तसव्वुफ को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे। हम उसी तसव्वुफ के अनुयायी हैं जिसे दूध और ह़क़ीक़त को मख्खन की भॉती बताया गया है। तो शरीअत के

लिए ह़क़ीकत अनिवार्य है, शरीअत अवश्य अपना फल लाएगी, उससे मृदुल स्वभाव तथा महानता उत्पन्न होती है, यदि वह अपना फल न दे तो रद्द करदी जाएगी क्योंकि कहा गया है कि शरीअत बिना ह़कीक़त बेमग्ज़ है एवं ह़क़ीक़त बिना शरीअत बातिल (झूठी) है।

प्राचीन और आधूनिक इस्लामी इतिहास, मानव समाज, मनुष्य, राष्ट्र तथा सभी लोगों के सुधार, उनके आध्यात्मिक विकास के सहित उन्हें ज्ञान और बुध्दी प्रदान करने में आदरनीय सूफिया की भूमिका के विषय में हमें अवगत कराता है। यह सांसारिक इतिहास में दुर्लभ है।

सूफीवाद अनुष्ठानों, पूजा के कार्य तथा प्रार्थना का संग्रह नहीं है, यह शुद्ध आस्तिक के हृदय पर एक स्थिति होती है जो अल्लाह की ओर से प्रवाहित होती है जिसे ह़ाल वाला ही महसूस करता है, उस से अंधकार दूर होजात हैं, मन शुद्ध होता है तथा हृदय की आंखें खुल जाती हैं, तो आरिफ वह देखता है जो अन्य व्यक्ति नहीं देखते।

लोगों के विकास में सूफिया की भूमिका

सभी वज्ञानिक सामग्री पर अपना प्रयास करते हैं, उसे अपने वश में करके उससे जो कुछ भी वह चाहते हैं बनाते हैं वैज्ञानिकों ने सामगो, लोहे, तांबे

को हर प्रकार से वश में करने हेतू अपनी पूरी उर्जा लगादी तो उन्होंने ट्रेन का आविष्कार किया जो जमीन पर एक उच्च गति से चलती एवं हमें एक स्थान से अन्य स्थान तक ले जाती है। वे पुनः अंतरिक्ष में सोच विचार करते हैं और उस विमान की खोज करते हैं जो हमें उच्चतम स्थान पर ले जाता है तथा कम समय में अधिक दूर के स्थान पर पहुंचा देता है। उन्होंने फिर अपने अधिकांश प्रयास किए और टेलीफोन, मोबाइल, ई-मेल इत्यादि जैसे टेलीपोर्ट का आविष्कार कियाए और हमारे लिए संभव बनादिया कि हम पश्चिम से बोलने वाले व्यक्ति की वाणी पूरब में सुन सकते हैं न केवल सुनते हैं बल्कि देखते भी हैं। जो हम सुन रहे हैं और देख रहे हैं कोई व्यक्ति सौ वर्ष प्रथम इसकी कल्पना करता था? नहीं, कदापि नहीं, मानव के लिए चंद्रमा पर चरण रखना कैसे संभव हुआ? यह सब केवल सामग्री को संशोधित करके, अन्य प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाओं में स्थानांतरित करके तथा सोचने का काय हर दिन जारी रखने के द्वारा संभव हुआ।

इसी पर मनुष्य की तबीअत को मापें, सर्वशक्तिमान ने सृजन में मनुष्य को सम्माननीय बनाया और चार स्वरुप रखे, (१) प्राणी स्वरुप, (२) शेर का स्वरुप, (३) शैतानी स्वरुप, (४) स्वर्गदूतों का स्वरुप, जीव–जंतु स्वरुप मानव को वासनाओं तथा व्यभिचार

की ओर लेजाता है। शेर का स्वरुप क्रोध को जनम देता है, बदला लेने पर उत्तेजित करता और हत्या एवं रक्तपात की ओर लेजाता है। शैतानी स्वरुप उसे धोखाधडी और हृदय के रोगों जैसे ईर्ष्या, दिखावा, घृणा, व्देष और झूठ को जनम देता है। स्वर्गदूतों का स्वरुप उच्चतम विशेषताएं प्रदान करता, मानसिक और मनोवैज्ञानिक रोगों से बचाता तथा ऐसे स्थान पर पहुचाता है जहां स्वर्गदूत उस पर रश्क करते है।

अल्लाह तआला ने पशु को केवल वासना प्रदान किया और स्वर्गदूतों को केवन बुध्दी, किन्तु मानव को बुध्दि और वासना दोंनो दिया। तो वह कडी परीक्षा में है। जिस पर उसकी वासना भारी पडजाती है वह पशु की भांती होजाता है। और जिस पर उसकी बुध्दी भारी होती है वह स्वर्गदूतों के पद तक पहुंच जाता है अथवा उससे बढकर।

जब तक पहले तीनों स्वरुप छोड न दिए जाएं मनुष्य के लिए स्वर्गदूतों के पद पर पहुंचना असंभव है, तो मनुष्य को आवश्यकता है ऐसे व्यक्ति की जो हृदय स्वच्छ करे तथा उसे प्रत्येक असामाजिकता, दुर्गुणों एवं हृदय रोगों से पवित्र करे। बिना संदेह वह सूफिया हैं और सूफीवाद का मार्ग है जिसे तसव्वुफ कहा जाता है।

सूफिया अपने मठों में तज़किया, तरबियत (प्रशिक्षण) और शिक्षा की प्रक्रियाएं करते हैं जैसे

वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं में करते हैं। सूफी सालिक से मुजाहदा और मुराक़बा करवाता है उसके नफ्स को दुर्बल बनाता तथा उसकी तीव्रता तोडता है यहां तक कि यह पानी में घुलने वाले नमक की भांति घुलने लगता है। उसे पाक करता रहता है यहां तक कि उसका अंधकार और अशुध्दियां हट जाती हैं। दिल और आत्मा का वर्णन होता है और उस से शुद्ध पानी निकलने लगता है। मुजाहदा और तज़किया के दौरान वह सभी आदाबः कम भोजन लेना, कम सोना और कम बालने के प्रति प्रतिबद्ध होता है। अधिक उपवास और मुराकबा करता है। यह तीनों स्वरुपों को परिवर्तित करने हेतू एक रासायनिक प्रकिया है। जब इन स्वरुपों का अंत हो जाता है तो मनुष्य खुदाई गुणों वाला हो जाता है। जैसा कि ह़दीस में आया

تخلقوا بأخلاق الله

ऐ लागों खुदाई गुणों वाले होजाओ।

तथा वह मानव का पद ह़ासिल कर लेता है। और मानव का पद विलायत है एवं कमाले विलायत नुबुव्वत है और कमाले नुबूव्वत रिसालत है आर कमाले रिसालत मुह़म्मदिय्यत है صلی اللہ علیہ و سلم फिर वह अल्लाह तआला के ह़रकत देने से ही ह़रकत करता, उसी के इरादे से वाणी करता तथा उसी की इच्छा से चलता है। उसके हाथ पॉव एवम् इहसास अल्लाह तआला की पैरवी करते हैं। वह जग से जुदा होकर सर्वशक्तिमान का होजाता है। अल्लाह तआला उसे अपने औलिया के गठन में मिला लेता है, उस के

लिए नूर क मिंबर बनाता तथा उसे अधिकार एवं बल प्रदान करता है। तो वह संसार में जैसे चाहता है तसररुफ करता है। यदी किसी वस्तू को कह दे होजा तो वो तुरन्त हो जाती है। यहां तक कि यदी शव से कह दे कि अल्लाह की अनुमती से खडा होजा तो वो जीवित होजाता है। जैसा कि कुतुबुलअक़ताब सय्यिदुना अबदुल क़ादिर जोलानी गौसे आज़म رضی اللہ عنہ के बारे में तवातुरन मनकूल है, जिसे अल्लामा मुहद्दिस फक़ीह अबुल हसन अली बिन यूसुफ बिन जरीर लख़्मी शाफिई शतनूफी ने ठोस हवालां सहित अपनी प्रषिद्ध पुस्तक बहजतुल असरार में लिखा है। यह मामला ऐसा नहीं है कि मनुष्य इस में संकोच तथा आशचर्य करे। क्योंकि अल्लाह तआला ने इस का पूर्ण विवरण किया है। जैसा कि हदीसे कुदसी में है

لم يزل عبدی يتقرب الی بالنوافل حتی احببتہ فاذا احببتہ كنت سمعہ الذي يسمع بہ و بصره الذی يبصر بہ و يده التي يبطش بها و رجلہ التي يمشي بها و لئن سألنی لأعطينہ و لئن استعاذني لأعيذنہ۔ (صحيح البخاری كتاب بدء الخلق باب ذكر الملائكۃ، صحيح المسلم كتاب البر و الصلۃ و الآداب)

मेरा दास नवाफिल द्वारा मेरे निकट होता रहता है यहॉ तक कि मैं उस से प्रेम करने लगता हूं फिर जब मैं उस से प्रेम करता हूं तो उस का कान बन जाता हूं जिस से वह सुनता है, उसकी ऑख बन जाता हूं जिससे वह देखता है, उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकडता है और उसका पॉव बन जाता हूं जि से वह चलता है। यदी वह मुझ से कुछ मॉगता

है तो मैं उसे अवश्य प्रदान करता हूं तथा यदी वह मेरी शरण में आता है तो मैं उसे अपनी शरण में लेता हूं।

तो यह माननीय सूफिया जो बिना किसी आले के पश्चिम पूर्व के दरमियान की प्रत्एक वस्तुओं को देखते है, बिना किसी सुनने के आला के सुनते हैं, जाहिर एवं बातिन का मुशाहदा करते हैं, उनसे जगत निर्देशित होता है, जिन्न एवं मानव जाती उनसे ज्योती की पाप्ती करती है, उनकी बरकत से अल्लाह तआला वर्षा उतारता है, आकाश बरसता है तथा भूमी अपने पेड पौदे उगाती है। यदी उनका अस्तित्व न हो तो न आकाश से वर्षा हो नाही पृथ्वी से पौदे उत्पन्न हों।

जिनसी, राष्ट्रीय, जातीय, भाषाई एवं क्षत्रीय सहित सभी मतभेदों को समाप्त करने का श्रेय इसी माननीय गठन को जाता है। उन का दस्तरख्वान सभी वर्ग के मनुष्यों के लिए होता है। मुस्लिम, हिंदू, बौद्ध, जैन एवं नसरानी सब एक स्थान पर एकत्रित होकर भोजन करते थे। वह सारे संसार को सर्वशक्तिमान का बाल समझते हैं। इस लिए कि इस्लाम जाहिलाना परंपराओं का अंत करने तथा नसबी एवं सापेक्ष मतभेदों को ध्वस्त करने आया है। जग के सरदार صلی اللہ علیہ و سلم ने हज्जतुल वदा के रोज खुतबा देते समय इस्लाम के संविधान की घोषणा की है जिस की रिवायत अब्दुल्लाह बिन उमर करते ह। वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ و سلم ने फरमाया:

أيها الناس ان الله قد أذهب عنكم عيبة الجاهلية و تعاظمها بآبائها فالناس رجلان رجل بر تقي كريم و فاجر شقي هين على الله والناس بنو آدم و خلق الله آدم من التراب قال تعالى يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ أُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (عسقلانی فتح الباری)(1)

ऐ लोगों इस में संकोच नहीं कि अल्लाह ने तुम से जाहिलिय्यत का दुग़ण तथा जनजातियों और पुर्खों पर फख्र करना दुर कर दिया है। तो लोग दो प्रकार के हैं। नेक प्रहेज़गार अच्छा मानव और असामाजिक दुष्ट मानव तथा अल्लाह के निकट बेवक़अत। लोग आदम की औलाद हैं और आदम को अल्लाह ने मिट्टी से बनाया। अल्लाह तआला का निर्देश है: ऐ लागे हम ने तुम्हें एक पुरुष और एक महिला से जन्म दिया तथा तुम्हें समुदायों में बॉट दिया ताकि पहचाने जाओ। बिना संदेह अल्लाह क यहॉ तुम में अधिक आदर वाला वह है जो अधिक प्रहेजगार है बिना संदेह अल्लाह ज्ञान वाला खबरदार है।

इमाम अह्मद ने अपनी मुसन्नद में यह ह्दीस लिखी है:

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يأيها الناس إن ربكم واحد وإن أباكم واحد لا فضل لعربي على عجمي و لا لعجمي على عربي ولا لأحمر على أسود ولا لأسود على أحمر إلا بالتقوى إن أكرمكم عند الله أتقاكم. ألا هل

(1) أخرجه البخاري في صحيحة في كتاب بدء الخلق باب ذكر الملئكة و مسلم في صحيحه في كتاب البر و الصلة و الأدب

بلغت! قالو بلى يا رسول الله. قال فليبلغ الشاهد الغائب.(١)

अल्लाह के संदेशवाहक صلى الله عليه و سلم का निर्देश है बिना संदेह तुम्हारा पालनहार एक है तथा तुम्हारा पिता एक है किसी अरबी को किसी अजमी पर कोई फज़ीलत नहीं और न ही किसी अजमी को किसी अरबी पर, किसी लाल को किसी काले पर किसी प्रकार की फज़ीलत नहीं तथा न किसी काले को किसी लाल पर परन्तू तक़वा के आधार पर। तुम में अल्लाह के निकट अधिक आदरनोय वह है जो अधिक मुत्तक़ी है। खबरदार! क्या मैं ने पहुंचादिया? लोगों ने कहा क्यों नहीं ऐ अल्लाह के रसूल! फरमाया तो जो यहॉ उपस्थित हैं वह अनुपस्थित लोगों तक यह बात पहंचादें।

सही एवम ठोस आधार पर मंजमिद मठों (ख़ानकाहों) के संविधान का नवीनीकरण

बिना संकोच मठ एवं सूफिया के रिबात प्राचीनकाल में आध्यात्मिक स्वच्छता तथा मार्गदर्शन का केंद्र, निद्रेश एवं उपदेश के स्रोत, निर्धनों एवं मिसकीनों के निवास स्थान थे। दूर दूर से सृजन उसकी ओर आती, वहॉ आध्यात्मिकता तथा चतुरता का पाठ पढती, जिहादे अकबर करती, सत्य के समूद्र से मारिफत का प्याला पीती, अनफुस व आफाक का भ्रमण करतो, सातों आकाश के शासन का मुशाहदा करती, तजरोद व तफरीद तथा तौहीद एवं प्रायणता

[1] احمد بن حنبل، المسند رقم الحديث ٢٣٥٣٦

के समूद्र में डूब जाती, नासूत व मलकूत एवं जबरुत तथा दिव्यता के संसार से जुदा हो जाती, फिर वह अल्लाह ही को देखते, उसी से सुनते तथा उसी का क़स्द करते थे।

परन्तु मामला मुल रुप से परिवर्तित होगया है। तथा इस अवधी में निशानी अन्य होगई हैं माद्दियत ने जीवन के सभी शोबों पर प्रभृत्व पालिया है। कोई वास ऐसा नहीं जिस में इस का प्रवेश न हुआ हो। मठों में भी यह रोग पहोंचा और अध्यात्मिक मान्यता का आधार ध्वस्त होगया। तावीज़ एवं झाड फूंक, जादू तथा जिन्न व शयातीन दूर करने के व्यव्साय को पराथमिकता दी जाने लगी तथा उनकी ओर ख्वाहिशात का झुकाव हुआ। मठों ने अपने लक्ष को भुलादिया, वर्तमान काल के तकाजे पर विचार न किया। परिणाम यह हुआ कि अपनी शक्ति से हाथ धो बैठे तथा हृदयों पर अपना शासन एवं समाज पर अपना प्रभाव खोदिया।

मठों के नियम के पतन का कारण

अब हम यहॉ उन कारणों का विवरण करें गे जिस ने मठों के नियम की गिरावट पर सहायता की, उसकी संरचना को हिलाकर रख दिया तथा उसे पसमांदगी तक पहुंचादिया।

१–माद्दियत उन लोगों पर गालिब आगई जो उन मठों के वाली थे तो उन्हों ने इन पवित्र महान सूफिया तथा औलिया की समाधियों को व्यापार का स्थान बनालिया अतिरिक्त उसके जिसे अल्लाह ने इस

विपदा से बचाया।

२–उन मुतवल्लियों में जिन्हें अल्लाह तआला ने मठों के मामलों का वाली बनाया, अज्ञानता और अनैतिकता आम होगई, उनके स्वभाव भ्रष्ट होगए, बिदअत फैल गई तथा उनमें गुरुर एवं घमंड आगया। कुछ लोग सत्य के मार्ग से दूर चले गए तथा शरीअत और तरीक़त में अंतर उत्पन्न करने लगे। खुदा के आदेशों एवं शरीअत की सीमाएं भूल गए तथा धार्मिक मामलों और अपने ऊपर इस्लामी संविधान को लागू करने में आलस्य किया। ऐसे कार्यों में लग गए, शरीअत एवं तरीक़त से जिसका कोई सम्बन्ध नहीं, जैसे एक से अधिक अंगूठी पहनना, पीठ तक बाल बढाना, नमाजें छोडना, स्त्रियों से मिलना तथा अन्य विचलन। वह लोगों के सामने अपने आप को सर्वोच्च सुंदर वस्त्रों में प्रस्तुत करने लगे, उन महान नुफूसे कुदसिया एवं पवित्र आत्माओं से मुशाबहत स्पष्ट करते हुए जिनके शरीर रात दिन बिस्तर पर नहीं लेटते बल्कि रात दिन पूजा, इस्लाम की सेवा तथा सृजन को अमंत्रित करने में बिता देते।

मठों के आयोजन और समकालीन आवश्यकताओं के अनुसार इसे प्रगतिशील बनाने के विषय में सुझाव

१–आदरणीय सूफिया और मठों के राज्यपालों पर अनिवार्य है कि वह इलमे शरीअत को सशक्त थामलें। अपने बच्चों और उत्तराधिकारियों को प्रशिक्षित करने की पूर्ण

देखभाल करें, जो शीर्घ ही उनके स्थान पर बैठेंगे। प्रथम उनहें इलमे शरीअत का ज्ञान दें जिसे दूध औक शरीर से उपमा दिया गया है। और अंततः

उनकी आत्म का शोधन करें, दिल की शुद्धि करें और उनहें सूफिया के तरीक़े और उस मारिफत व ह़क़ीक़त की शिक्षा दें जो मक्खन और आत्मा के भॉती है।

इमामे मालिक رحمۃ اللہ علیہ का उपदेश है:

من تفقه ولم يتصوف فقد تفسق ومن تصوف ولم يتفقه فقد تزندق ومن جمع بينهما فقد تحقق.(١)

जिस ने फिक्ह् प्राप्त किया रहस्यवाद प्राप्त नहीं किया वह फासिक् होगया, जिसने रहस्यवाद प्राप्त किया तथा फिक़्ह् की प्राप्ती न की वह मुलहि़द होगया एवं जिसने उन दोनों की प्राप्ती की वह सिद्ध होगया।

जो शरीअत से अज्ञानी होता है शैतान उसे अपना खिलौना बना लेता है तथा उसे गुमराही एवं इलह़ाद की ओर लेजाता है। तथा जो तरीक़त एवं ह़क़ीक़त से ग़ाफिल है वह महानता के स्थान पर नहीं पहुंचेगा तथा नफ्स की परिक्षा में फंस जाएगा।

२–मठ वालों का यह कर्तव्य है कि वह गैरों में सूफिया की शिक्षा, विकास तथा इस्लाम के प्रसार हेतू हर मठ में केंद्र की स्थापना करें। आगंतुकों हेतू ह़लकए ज़िक्र तथा उपदेशिक समारोह आयोजित करें एवं उनका इस्लामी प्रशिक्षन करें।

(١) أخرجه العلامة على القاري في مرقاة المفاتيح

३–ऐसे पुस्तकालय की स्थापना करें जो भिन्न भाषाओं में माननीय सूफिया तथा इस्लाम धर्म से संबंधित पुस्तकों से भरा हो तथा उसमें पढने और बैठने की संपूर्ण सुविधाएं उपलब्ध हों।

४–किसी ठोस संगठन की स्थापना करें जो विश्विक तथा राष्ट्रीय स्तर पर सूफिया एवं उनके मठों के बीच संबन्ध जोडे।

५–शारीरिक तथा अध्यात्मिक चिकित्सा हेतू तिब्बी एवं अध्यात्मिक चिकित्सा स्थान स्थापित करं। मुस्लिम एवं काफिर, भाग्यशाली एवं भाग्यहीन, अच्छे दुष्ट, रंग एवं जात तथा जिनसी अंतर के बिना देश एवं धर्म की सेवा करें।

६–सूफिया की वास्तविक शिक्षा के प्रकाशन, शांति फैलाने, भाईचारे तथा बराबरी को ठोस बनाने एवं संपूर्ण मानवता के बीच एकता उत्पन्न करने तथा अल्लाह से उसके संबन्ध को ठोस बनाने हेतू संगोष्ठियों तथा सम्मेलनों का आयोजन करें। हमारी चेष्टा है कि तसव्वुफ ही एकमात्र मार्ग है जो मनुष्यों की नाव शांति के साहिल तक लेजाएगा। वही इस समय की चुनौतियों और समस्याओं से इस नश्वर संसार को निकाल सकता है। अल्लाह तआला हमें एवं आप को तसव्वुफ तथा उन पवित्र आतमाओं के दामन को मजबूती से थामने की तौफीक़ प्रदान करे जो ह़कीक़त तक पहुंचाने वाले है। हम उसी से क्षमा तथा इस नश्वर संसार एवं शेष रहने वाली आखिरत में सलामती मॉगते है।

الفیوض الجیلانیة فی الفتاوی القادریة

معروف بہ

تصنیف

محمد رضا قادری

استاذ: الجامعۃ الاشرفیہ، مبارک پور، اعظم گڑھ، یوپی

باہتمام

محمد وسیم سونے والے (بیجاپور، کرناٹک)

ناشر

کتب خانہ قادریہ (مبارک پور)

وخانقاہِ قادریہ چشتیہ راہِ سلوک، مراد آباد، یوپی

Fatawa Quadriya
(March 2021)

Kutub Khana Quadriya (Mubarakpur)

wa Khanqah-e-Qadriya Chishtiya Raahe Sulook, Muradabad, U.P.

सूफ़िवाद आतंकवाद का अंत करता तथा बौद्रिक उग्रवाद को चुनौती देता है

लेखक

मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा क़ादरी

शिक्षकः अलजामियतुल अशरफ़िय्या, मुबारकपुर

प्रसारण कर्ता

कुतुबख़ाना क़ादिरिय्या, मुबारकपुर

६ ख़ानक़ाहे क़ादिरिया चिश्तिया राहे सुलूक

चाँद पुर, मुरादआबाद यु.पी

TERRORISM
التصوف يكافح الإرهاب
و
يتحدى التطرف الفكرى
إعداد
محمد رضا القادرى المصباحى
أستاذ: الجامعة الأشرفيه، مباركفور، أترابراديش (الهند)

ملک وملت کے سلگتے ہوئے مسائل، اُمتِ مسلمہ کے عروج وزوال کی تاریخ
پر شعور وآگہی کے بند دروازے کھولنے والی کتاب

آئینۂ شعور وآگہی
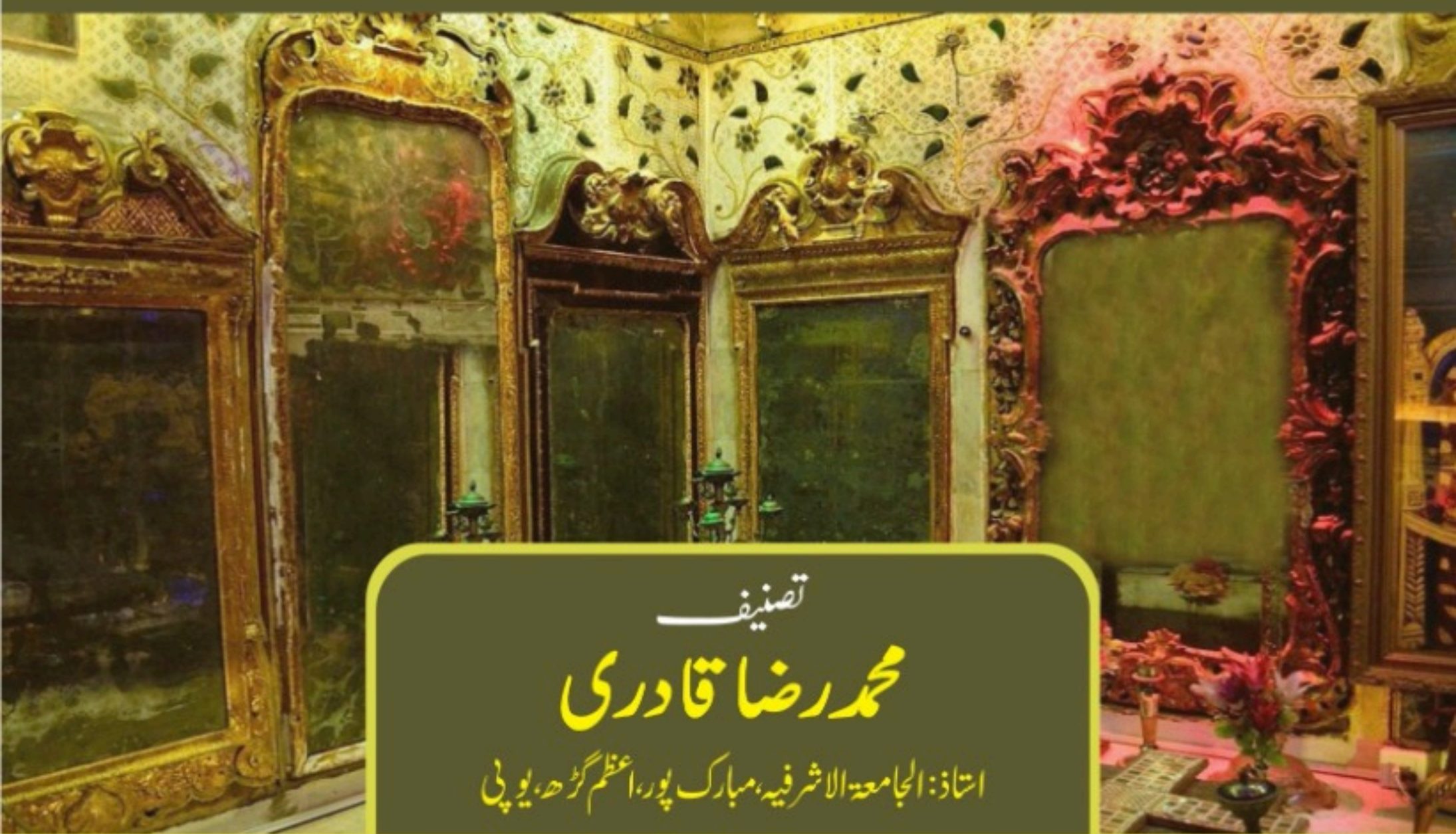
تصنیف

محمد رضا قادری

استاذ: الجامعۃ الاشرفیہ، مبارک پور، اعظم گڑھ، یوپی

باہتمام: مولانا عبد الصمد امجدی، مقیم حال قطر

ناشر

کتب خانہ قادریہ (مبارک پور)

وخانقاہِ قادریہ چشتیہ راہِ سلوک، مرادآباد، یوپی

شخصیاتِ اسلام

تصنیف

محمد رضا قادری

استاذ: الجامعۃ الاشرفیہ، مبارک پور، اعظم گڑھ، یوپی

باہتمام

انجینئر محمد شکیل قادری، بیجاپور، کرناٹک

ناشر

کتب خانہ قادریہ (مبارک پور)

وخانقاہِ قادریہ چشتیہ راہِ سلوک، مراد آباد، یوپی

۲۰۰۶ء سے ۲۰۱۵ء تک کے ذاتی احوال، مشاہدات اور
تجربات پر مبنی خودنوشت

قادری ڈائری

تصنیف
محمد رضا قادری
استاذ: الجامعۃ الاشرفیہ، مبارک پور، اعظم گڑھ، یوپی

باہتمام
مولانا محمد الیاس واسطی
بیجاپور، کرناٹک

ناشر
کتب خانہ قادریہ (مبارک پور)
وخانقاہِ قادریہ چشتیہ راہِ سلوک، مراد آباد، یوپی

اُمتِ مسلمہ نیپال کی علمی، فکری، روحانی اور اجتماعی نشاۃ ثانیہ کے لیے
گذشتہ ایک دہائی میں کی جانے والی جد و جہد کی روح پرور تاریخ

تعمیرِ اُمت، نیپال

تصنیف: محمد رضا قادری

استاذ: الجامعۃ الاشرفیہ، مبارک پور، اعظم گڑھ، یوپی

باہتمام: الحاج عبد العزیز صاحب سونے والے
بیجاپور، کرناٹک

ناشر: راشٹریہ علما کونسل، کاٹھمنڈو، نیپال

Tameer-e -Ummat, Nepal
(March 2021)

Constitution of Nepal
آئینِ جمہوریہ نیپال

नेपाल - नेपाली मुसलमानों की समस्यायें एवं समाधान
लेखक
सूफी मुहम्मद रज़ा कादरी
प्रसारण कर्ता
राष्ट्रीय उलामा कॉउन्सिल, नेपाल

सूफ़ीवाद आतंकवाद का अंत करता तथा वैदिक उग्रवाद को चुनौती देता है
लेखक
सूफी मुहम्मद रज़ा कादरी

آئینۂ شعور و آگہی
محمد رضا قادری

فتاویٰ قادریہ
محمد رضا قادری

شخصیاتِ اسلام
محمد رضا قادری

قادری ڈائری
محمد رضا قادری

التصوف یکافح الإرهاب و یتحدی التطرف الفکری
محمد رضا القادری المصباحی

تعمیرِ امت نیپال
محمد رضا قادری
ناشر
راشٹریہ علما کونسل نیپال

RASHTRIYA ULAMA COUNCIL, NEPAL
Kirtipur, 2- Maitri Nagar, Kalanki, Kathmandu, Nepal
Mob. No. 9802078692 / 9846964587

حركة راه سلوك العالمية
تعريف وأهداف

حركة راه سلوك العالمية حركة روحانية صوفية دعوية رفاهية غير سياسية لأهل السنة والجماعة أنشأها الداعية الكبير فضيلة الشيخ الصوفي **محمد ظهير عالم القادري الجشتي البركاتي** في قرية چاند فور، مديرية مراد آباد، أترابراديش (الهند) في سنة ٢٠١١م.

تهدف هذه الحركة إلى تربية المجتمع البشري على نمط إسلامي وتزكية النفوس وتصفية القلوب عن طريق التصوف، وإحياء أنظمة الزوايا على أسس متينة ومناهج صحيحة وفتح المدارس الأهلية (العربية والإنجليزية) وكليات الطب و الهندسة والزراعة والجامعات لتعليم البنين والبنات وإقامة المساجد وتأسيس الخانقات ومراكز للتربية الروحانية في الهند وخارجها والمستشفيات الطبية والروحانية.. والآن تقوم بالأعمال فيما يلي من الأقسام:

١) كنز الإيمان في ثقافة القرآن (المجلس العلمي) يكفل تسع مدارس في شتى الولايات.

٢) مؤسسة قرض حسنة (مجلس الفلاح - البنك الاسلامي).

٣) راه سلوك شركة تجارية أهلية.

٤) قسم الطب والزراعة (F.Q. Pharmacy).

٥) جمعية الأئمة لأهل السنة لعموم الهند.

٦) المكتبة المكية (قسم النشر والطباعة).

٧) مكتبة الإمام أحمد رضا.
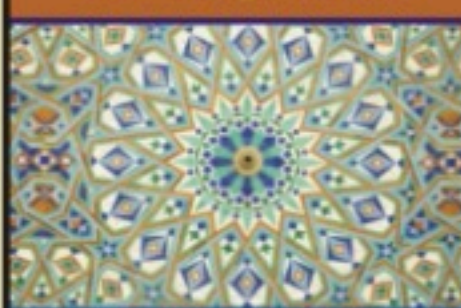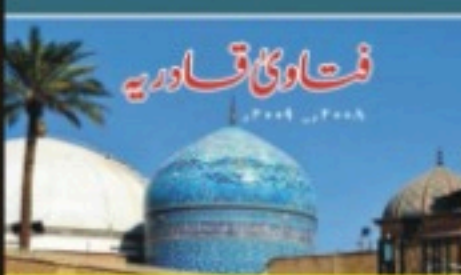
٨) دار الإفتا للإمام الأعظم.

نلتمس المسلمين أن يساهموا في هذه الأعمال الخيرية والرفاهية ويتعاونوا على الصلاح والفلاح والبر والتقوى.

website : www.rahesulook.net
email : quransociety2013@gmail.com

Nepal, Nepali Musalmanon ki Samasyaein aeon Samadhan

(March 2021)

RASHTRIYA ULAMA COUNCIL, NEPAL
Kirtipur, 2- Maitri Nagar, Kalanki, Kathmandu, Nepal
Mob. No. 9802078692 / 9846964587

شرح ہدایۃ النحو

و

زبدۃ مباحث القطبی

سنہ تالیف ۲۰۰۳ء

محمد رضا قادری

استاذ: الجامعۃ الاشرفیہ، مبارک پور، اعظم گڑھ، یوپی

ناشر

کتب خانہ قادریہ

مبارک پور، ضلع اعظم گڑھ، یوپی

Sharah Hidayatun Nahv
(March 2021)
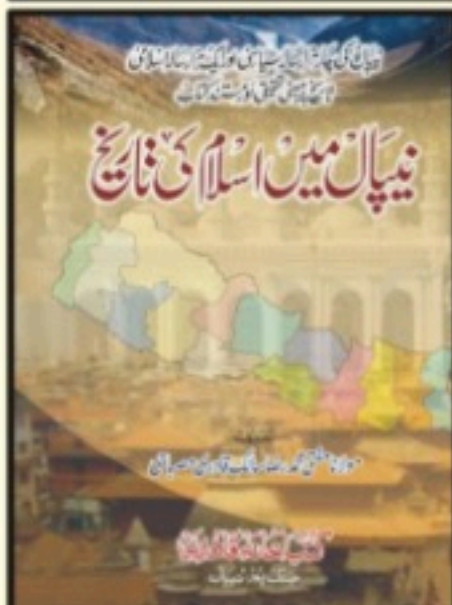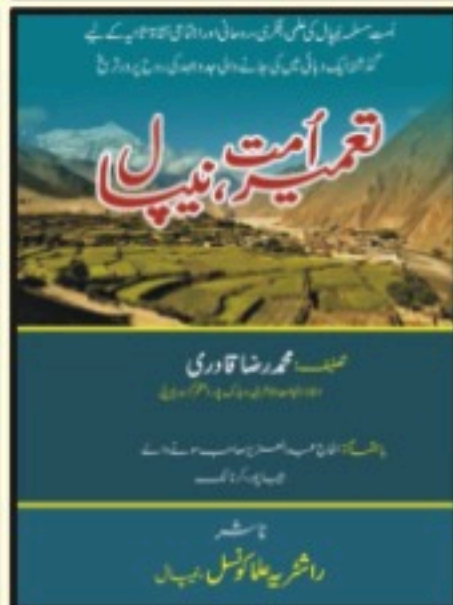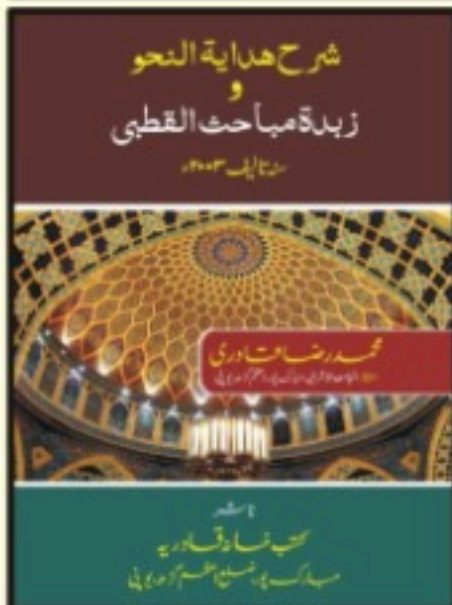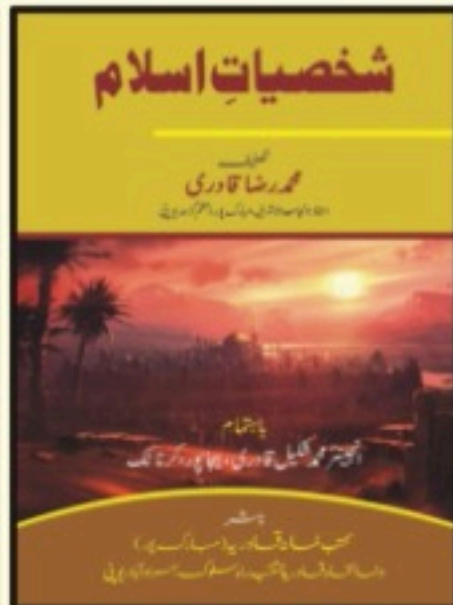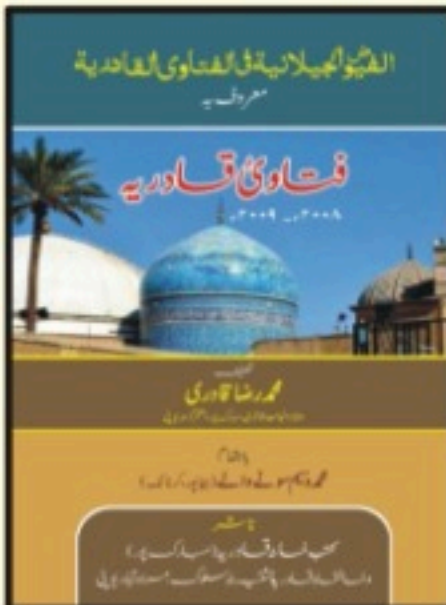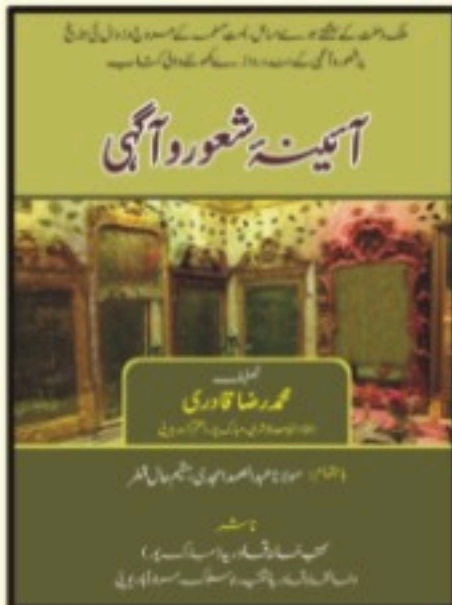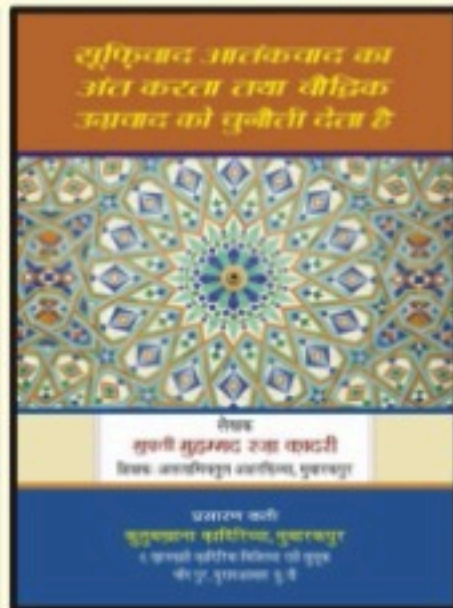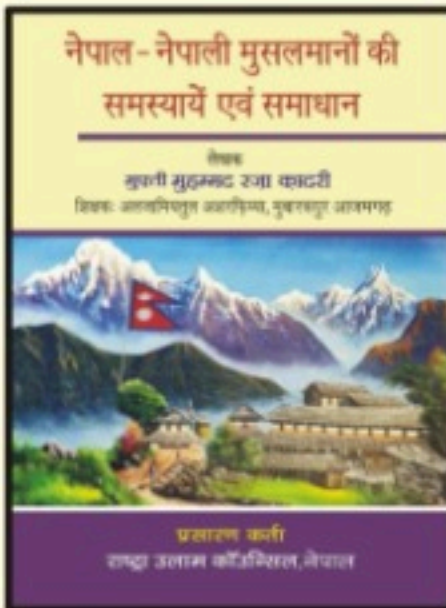
₹ 50/-

Kutub Khana Quadriya

Mubarakpur, Jila Azamgarh, up